भगवान के दर्शन

मॉर्गन हूपर द्वारा पुनर्लिखित

कभी-कभी भगवान भक्तों को बहुत ही अनपेक्षित तरीक़ों से दर्शन देते हैं। सत्य को जानने की उत्कट लालसा और दृढ़ संकल्प होने पर भी, भगवान ऐसे रूपों में प्रकट होते हैं जिनकी हमने कल्पना भी न की हो। ऐसी ही कहानी है, एक भक्त की जिनका नाम था, बालकृष्ण म्हस्कर।

अपने जीवनभर बालकृष्ण, भगवान दत्तात्रेय के अनन्य भक्त थे। भगवान दत्तात्रेय जो त्रिदेवों—ब्रह्मा, विष्णु और शिव— के त्रिमुखी अवतार हैं। बालकृष्ण का हृदय दत्त भगवान के दर्शन पाने की इच्छा से तड़प रहा था और इसलिए वे दक्षिणी महाराष्ट्र में स्थित अपने घर से कर्नाटक के गाणगापुर की यात्रा के लिए निकल पड़े। गाणगापुर उनके परमप्रिय इष्टदेव, दत्त भगवान का तीर्थस्थान है।

गाणगापुर में, बालकृष्ण ने श्रीगुरुचरित्र का १०८ बार पारायण करने का निश्चय किया। इस ग्रन्थ में आठ हजार श्लोक हैं जिनमें भगवान दत्तात्रेय की महिमा का वर्णन किया गया है और इसके एक पारायण में एक सप्ताह का समय लगता है। लेकिन बालकृष्ण के लिए यह कोई बड़ी बात नहीं थी। उन्हें तो बस एक ही बात सूझ रही थी, कि उन्हें भगवान दत्तात्रेय के दर्शन करने हैं। जब तक उन्होंने इस ग्रन्थ के सौ पारायण पूरे किए, दो वर्ष बीत चुके थे।

अब मात्र आठ पारायण शेष थे; बालकृष्ण अपने संकल्प के प्रति दृढ़ बने रहे। परन्तु, अब प्रत्येक पारायण के साथ वे और भी निराश होते जा रहे थे। जब श्रीगुरुचरित्र का एक सौ आठवाँ पारायण पूरा हुआ, वे दर्शन की आशा में कुछ समय के लिए शान्त बैठे रहे, प्रतीक्षा करते रहे, पर फिर भी तेजोमूर्ति भगवान कहीं नज़र ही नहीं आ रहे थे।

“अरे, मुझसे कहाँ ग़लती हो गई, अब मैं क्या करूँ?” वे सोच में पड़ गए। अगली ही रात को बालकृष्ण को स्वप्न आया जिसमें उन्हें भगवान दत्तात्रेय ने स्वयं यह आदेश दिया : “यदि तुम मेरे दर्शन चाहते हो तो गणेशपुरी जाओ।”

बालकृष्ण हैरान होकर जाग उठे। “गणेशपुरी? गणेशपुरी कहाँ है? मैंने तो इस जगह के बारे में कभी सुना ही नहीं है।” यद्यपि वे इस स्वप्न को पूरी तरह समझ नहीं पाए थे, तथापि इसे भगवान दत्तात्रेय की आज्ञा मानकर वे तानसा घाटी में छिपे इस पावन तीर्थ को खोजने चल पड़े।

वहाँ पहुँचते ही बालकृष्ण रास्ते में मिलने वाले लोगों से पूछने लगे, “क्या आप बता सकते हैं, मुझे दत्त भगवान कहाँ मिलेंगे?” “क्या आप बता सकते हैं, मुझे दत्त भगवान कहाँ मिलेंगे?”

कोई नहीं जानता था वे किसके बारे में बात कर रहे हैं, पर बालकृष्ण पूछते ही रहे। आख़िरकार, एक राहगीर ने बताया, “यहाँ दत्त भगवान नहीं हैं। यहाँ तो केवल भगवान नित्यानन्द हैं!”

“तो मैं इन नित्यानन्द के पास ही जाता हूँ,” बालकृष्ण बोले।

फिर उन्हें कैलास-निवास का पता मिला जहाँ भगवान नित्यानन्द का निवास था। वहाँ पहुँचकर बालकृष्ण ने पाया कि वे एक लम्बी-सी दर्शन-पंक्ति के सबसे आख़िर में खड़े हैं।

उसी क्षण, कैलास-निवास के भीतर, बड़े बाबा ने अपने आस-पास मौजूद कुछ बच्चों से कहा, “बाहर जाओ। मेरा एक भक्त प्रतीक्षा कर रहा है। वह मैले-से कपड़े पहने हुए है और उसके सिर पर सफ़ेद टोपी है। उसे अन्दर ले आओ।”

बड़े बाबा ने जो वर्णन किया था, उससे बच्चों ने बालकृष्ण को पहचान लिया और उनसे कहा कि भगवान नित्यानन्द उन्हें बुला रहे हैं। यह सुनकर बालकृष्ण अत्यधिक अचम्भित रह गए, पर वे बच्चों के साथ अन्दर चले गए।

जब बड़े बाबा ने बालकृष्ण को आते हुए देखा तो वे खड़े हो गए और अपने हाथों को बालकृष्ण के कन्धों पर रखते हुए बोले, “तुम दत्त भगवान को देखना चाहते हो न? मेरी ओर देखो।”

बालकृष्ण ने भगवान नित्यानन्द के नेत्रों में देखा और वे जान गए कि उनकी तीव्र ललक पूरी हो गई है। उनके सामने भगवान नित्यानन्द के कान्तिमय स्वरूप में भगवान दत्तात्रेय खड़े थे। अन्ततः, उन्हें अपने परमप्रिय भगवान दत्तात्रेय के दर्शन हो गए।

बड़े बाबा ने बालकृष्ण को कहा कि दत्त भगवान के दर्शन का उनका संकल्प पूरा हो गया है, अतः वे ब्राह्मणों को भण्डारा करें। यह कार्य पूरा होने के बाद बड़े बाबा ने बालकृष्ण को भगवान दत्तात्रेय के पावन तीर्थों की यात्रा शुरू करने के लिए कहा।

फिर एक बार, बड़े बाबा की आज्ञा का पालन करते हुए बालकृष्ण ने अपनी यात्रा आरम्भ की। वे सबसे पहले कुरवपूर में श्रीपाद श्रीवल्लभ के दर्शन के लिए गए जो दत्त भगवान के प्रथम अवतार हैं। उसके बाद वे श्रीनृसिंह सरस्वती के पुण्यस्थल गए जो गाणगापुर में भगवान दत्तात्रेय के द्वितीय अवतार हैं। वहाँ से वे भारत के अन्य समकालीन सन्तों के आश्रमों में गए—माणिक प्रभु, अक्कलकोट स्वामी और शिरडी के साईं बाबा। इन सभी को दत्त भगवान के ही अवतार के रूप में

पूजा जाता है। बालकृष्ण जहाँ भी गए, उस हर स्थान पर उन्हें एक-सा अद्‌भुत अनुभव हुआ।

बालकृष्ण आश्चर्यचकित रह गए, "मैं जिस भी देवता को प्रणाम करता हूँ, मुझे दर्शन हमेशा भगवान नित्यानन्द के ही होते हैं। **वे ही** सारे देवता हैं। **सब में** वे ही हैं।"

जब बालकृष्ण गणेशपुरी लौटे, वे अपने अनुभव से इतने प्रेरित थे कि उन्होंने अपनी तीर्थयात्रा का वर्णन करते हुए एक आरती लिखी। इस आरती में बड़े बाबा की स्तुति साक्षात् भगवान के रूप में की गई है कि उन्होंने इस ग्रह पर भिन्न-भिन्न काल में भव्य और तेजस्वी रूप धारण किए हैं।

इसके बाद बालकृष्ण ने यह आरती बड़े बाबा को अर्पित की। बड़े बाबा इस विशुद्ध प्रेम और भक्ति के कृत्य से बहुत प्रसन्न हुए। यही सुन्दर आरती 'नित्यानन्द आरती' के नाम से प्रसिद्ध हुई।

© २०२१ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।